

शोर  
NOISE

जब इरोपीय देशों में उद्योग का विकास हुआ तो कर्मचारियों की शारीरिक पुष्टि और मानसिक संतुष्टि की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया और प्रबंधकों का ध्यान सिर्फ उत्पादन और मशीनों की रख रखाव पर था। डिंड प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद मनोवैज्ञानियों और सरकारी तथा प्रबंधकों का ध्यान इस ओर जाने लगा और कर्मचारियों की स्थितियों में सुधार लाने के उपाय की खोज की जाने लगी। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जो देश काफी प्रभावित हुए थे उन्होंने अपनी पूरी शक्ति उद्योगों के विकास में लगा दी। इसी क्रम में यह जानने का प्रयास शुरू कर दिया गया कि उपयुक्त प्राकृतिक वातावरण का धनात्मक प्रभाव कर्मचारियों के कार्य क्षमता तथा उत्पादन पर क्या है? इसका उत्तर निश्चयित होकर वातावरण तिरुका और अन्य तत्वों की तरह शोर का प्रभाव को भी जानने का प्रयास प्रारंभ हो गया।

डिडी भी तेज, अचानक बदलती रहने से अक्षतुष्टि का एक आवाज का शोर या शोर का प्रभाव होता है - निरंतर शोर तथा अनिर्णय शोर। संगठनों में शोर के प्रभाव को महत्वपूर्ण माना गया है। इस संबंध में विद्वानों की मान्यता है कि शोर का दुष्परिणाम कर्मचारियों की कार्य क्षमता पर तो पड़ता ही है संगठनों के लिए भी अन्य धनीकारक प्रभाव उत्पन्न होते हैं। कार्य-स्थलीय शोर जैसे मशीनों की आवाज, कर्मचारियों की आपसी वार्तालाप निरीक्षकों द्वारा चिल्ला चिल्ला कर निर्दिष्ट देना काहर से आती हुई आवाज आदि के कर्मचारियों पर फलदात्मक प्रभाव से संबंध में मनोवैज्ञानिकों के बीच मत मिलता है। शोर का मानना है कि हर रोज होने वाले समान स्तर के शोर का दुष्परिणाम कर्मचारियों पर नहीं पड़ता है क्योंकि वे इनसे आदी हो जाते हैं।

नैनन एव नानर 1932 vermon & Warner ने बताया कि सोलाहक के स्वल्प पर निर्भर करता है कि उसका दुष्प्रभाव कर्मचारी के कार्य क्षमता पर पड़ता है या नहीं। यदि सोलाहक स्थित हो तो कर्मचारी उस परीस्थिति में अपने आप को अभियोजित कर लेता है। लेकिन जब सोलाहक सविराम हो तो कर्मचारी को कार्य क्षमता बनाये रखने के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है।

रुक कर्ट तथा पोस्नर Cawbest & Posner 1960 ने यह जानने का प्रयास किया कि कितनी इत तक कर्मचारी सोलाहक में अभियोजित कर पाते हैं तो पाया कि कुछ लाप्राहों में जेट विमानों की आवाज की तीव्रता में भी कर्मचारी अभियोजित हो गए। यहाँ कार्य क्षमता पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा रेल की पटरियों के नजदीक निवास करने वाले अभियोजित व्यक्तियों से यह पूछा जाए तो स्पष्ट होगा कि - प्रारंभ में काफी परेशानियाँ होती थी और रेल की आवाज से नींद भी बाधित हो जाती थी परंतु धीरे-धीरे अभियोजित होते गए और अब तो से. रेल की आवाज से नींद भी बाधित नहीं होती है।

कार्य क्षमता पर सोलाहक का प्रभाव पड़ेगा या नहीं यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि सोलाहक कार्य से संबंधित है या नहीं। जैसे टाइप राइटर पर काम करते हुए उस व्यक्ति के लिए स्वर-स्वर की आवाज बाधा उत्पन्न नहीं करती किन्तु यही आवाज बजल की टेबुल पर कार्य करते वाले व्यक्ति के लिए बाधक प्रभाव डालती है।

पोलक एव वार्टलेट Poulak & Bartlett ने कुछ छात्रों के हस्तलिखित तथा मासिक कार्यों का अध्ययन शंखिपूरु तथा सोलाहक पूर्ण वातावरण में किया तो पाया कि प्रारंभ में सोलाहक पूर्ण वातावरण में कार्य क्षमता कम हुई किन्तु शीघ्र ही उभरे अपने आपकी वातावरण के

अनुसूक्त बना किया और कार्य समाप्त नहीं की  
 मानसिक कार्य पर कोलाहल का गहारा प्रभाव  
 पडा और कार्य गति धीमी पड गयी इन्होंने  
 पाया कि अनिर्णय कोलाहल से सर दर्द चिड़चिड़ापन  
 तथा तनाव के माक देवने को निकला है  
 अवधि निर्णय कोलाहल का कोई दुष्प्रभाव नहीं  
 पाया गया।

मैडर कार्टने Mc. Cartney 1941 ने सम्मान  
 नियंत्रण संस्थान में अध्ययन के आधार पर पाया  
 कि श्रान्तिपूर्ण वातावरण में कोलाहल पूर्ण विलीन  
 की अपेक्षा गुणवत्ता और मात्रा के आधार पर  
 कार्य में 33% की वृद्धि हुई गलतियों में 13%  
 की कमी हुई। प्रमित परिवर्तन के दर में 57%  
 की कमी आयी। तथा र्कन्यायी अनुपातित के दर  
 में 37.5% की कमी पायी गयी। इन अध्ययन के  
 कार्य पर कोलाहल के दुष्प्रभाव को व्यापित की

मै 1972 MURPHY ने अनाइटेड किंगडम  
 में शोर से संबंधित कारन के विषय में बताया  
 है। कार्य सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का अध्ययन करने  
 वाली रोबेनस Robens समिति ने सुझाव दिया कि  
 कार्य परिवेश में शोर से संबंधित कारन बनाने  
 जाने चाहिए तथा इसकी जांच के लिए विशेष  
 निरीक्षणालय की स्थापना की जानी चाहिए।

बुद्ध अध्ययन से यह भी बतते हैं  
 कि बुद्ध व्यक्ति शोर से अधिक प्रभावित होते  
 हैं तो बुद्ध नहीं। कपकिन एव में सिमथ Cupping  
 & may Smith का मत है कि लम्बा तथा  
 शोर संसूचनशीलता के बीच संबंध है।  
 फ्रेजर Fraser ने पाया कि शोर के द्वारा उद्बुद्धि  
 र्कन्यायी में 10% व व्यक्ति के निम्नी प्रतिष्ठिता  
 स्नायविक विहारी के कारण थी। इन्होंने 49  
 लडकियों, 19 लडकों तथा 155 र्कन्यायी के अध्ययन

के आधार पर पाया कि स्नायु विहारी वाले लोग शोर के द्वारा अधिक उत्तेजित हुए। अतः कहा जा सकता है कि स्नायु विहारी वाले लोग ही शोर के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि मले के ही मरोवै ज्ञानियों के बीच लोगों में शोर के प्रभाव को लेकर मतभेद है पर इस स्थिति में अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि अनावश्यक शोर किसी भी कार्य परिवेश में कार्यरत कर्मचारियों के लिए अवांछनीय है अवांछनीय है। अतः सकार मरोवै ज्ञानियों तथा प्रबंधकों का संयुक्त प्रयास रहे होना चाहिए कि जिस प्रकार कार्य परिवेश से अन्य अवांछनीय तत्वों को निश्चित करने का कार्य होता है उसी प्रकार शोर को भी निश्चित किया जाना चाहिए यदि कर्मचारी बिना किसी प्रासंगिक उद्देश्य के तथा अनावश्यक ऊर्जा व्यय किए बिना अपने कार्य को सर्वश्रेष्ठ रूप से निष्पादित कर सकें।

ओरले Oklav 1945 की मान्यता है कि उद्योग परिवेश में शोर को कम कर देना न सिर्फ कर्मचारियों के लिए बल्कि निरोजकों के लिए भी लाभदायक है।